SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखंड आंदोलन में झामुओं और मासस की भूमिकाः एक ऐतिहासिक अध्ययन

नवनीत कुमार दांगी, शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नवनीत कुमार दांगी, शोधार्थी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/02/2024
Revised on : -----
Accepted on : 13/04/2024
Overall Similarity : 09% on 05/04/2024

शोध सार

झारखंड राज्य निर्माण की कहानी का इतिहास बहुत पुराना है। भारत के आजाद होने से काफी पहले से ही झारखंड राज्य के निर्माण के लिए आंदोलन हो रहा था। इस आंदोलन का शुरूआत सम्भवतः बिहार राज्य के निर्माण के साथ ही प्रारंभ हो गया था और एक लम्बे अरसे के बाद 15 नवम्बर 2000 ई. को झारखंड राज्य का सपना साकार हुआ। झारखंड आंदोलन लगभग 90 वर्षों तक चलने वाला आंदोलन था। इस आंदोलन में अनेक लोगों, बहुत सारे संगठनों समुदायों की भागीदारी रही। आंदोलन के शुरूआती चरणों में छोटानागपुर उन्नति समाज, कैथोलिक सभा, किसान सभा, आदिवासी महासभा आदि की प्रमुख भूमिका रही। पुनः झारखंड पार्टी ने उसके बाद आंदोलन का नेतृत्व प्रदान किया। दक्षिणी विहार को झारखंड पार्टी ने राजनीतिक एकता सूत्र में पिरोने का काम किया, लेकिन अपने स्थापना के 13 वर्षों के बाद ही झारखंड पार्टी का कांग्रेस में विलय के जयसवाल सिंह के फैसले ने झारखंड आंदोलन को तोड़कर रख दिया। इस फैसले के कारण आंदोलन को गहरा धक्का लगा और आंदोलन के धाराशाथी हो गया। इस दौर में पुनः झारखंड आंदोलन में जान फुंकने की कोशिश अनेक झारखंड नामधारी पार्टियों के द्वारा की गई लेकिन एकता के अभाव में वे कुछ नहीं कर सके। 70 का दशक झारखंड आंदोलन के लिए परिवर्तन का दौर माना जाता है। इस दौर में विनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन तथा ए. के. राय का झारखंड आंदोलन में प्रवेश हुआ। तीनों के आपसी सहयोग से झारखंड के निर्माण के लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुओं) का गठन किया गया। झामुओं ने झारखंड आंदोलन के लिए एक लम्बी लड़ाई लड़ी और अंततः सफलता मिली। मजदूरों को विस्थापितों को संगठित करने के उद्देश्य से ए. के. राय ने

अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) का गठन किया। मासस ने कोयलांचल के क्षेत्र में मजदूरों को संगठित करने के साथ–साथ उनके बीच झारखंड आंदोलन को लोकप्रिय बनाया। झारखंड राज्य निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य शब्द

झारखंड मुक्ति मोर्चा, पृथकतावादी, समाजवादी, सर्वहारा, आंदोलन, जनजातीय.

विषय वस्तु

झारखंड आंदोलन में मासस की भूमिका

झारखंड आंदोलन में मासस की महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिलती है। विशेषकर मजदूर वर्ग के बीच कोयलांचल और इसके आस–पास के क्षेत्रों में झारखंड आंदोलन को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका दिखती है। मासस ने ही मजदूरों, किसानों तथा विस्थापितों को गोलबंद करके उसे झारखंड आंदोलन से जोड़ने का काम किया था।

मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) की स्थापना तात्कालीन बिहार राज्य की राजधानी पटना में 22 अप्रैल 1972 को पूर्व विधायक और सांसद ए. के. राय के द्वारा अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर की गया थी।[1] मासस के गठन का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न मार्क्सवादी पार्टियों में आपसी समन्वय स्थापित करना जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है।[2] मजदूरों किसानों, विस्थापितों तथा समाज के वंचित वर्गों को संगठित करना और सामंतों, जमींदारों, महाजनों, सुदखोरों और माफियाओं के खिलाफ एकजुट कर उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करना। इस उद्देश्य में ए. के. राय काफी हद तक सफल रहे। मासस के गठन से पूर्व से ही ए. के. राय जब सिंदरी में इंजीनियर थे, उसी समय से वे शोषण उत्पीड़न के खिलाफ लोगों को संगठित कर रहे थे मासस के गठन से पूर्व साथी नामक संगठन की स्थापना भी ए. के. राय के द्वारा की गई थी। इस 'साथी' नामक संगठन के जरीये लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से रात्रि पाठशाला का आयोजन किया। सामाजिक बुराईयों, दहेज प्रथा नशाखोरी आदि के प्रति लोगों को जागरूक बनाने में जुटे हुए थे।[3] इसके साथ–साथ वे झारखंड आंदोलन से भी जुड़ गए। बौद्धिक रूप से शुरूआत में झारखंड आंदोलन को समर्थन किया और बाद में खुलकर उन्होंने सरकार पर झारखंड राज्य के निर्माण के लिए दबाव बनाया। ए. के. राय ने आगे चलकर न सिर्फ झारखंड आंदोलन का बौद्धिक रूप से समर्थन किया बल्कि आंदोलन से जुड़कर एक अग्रणी साथी की भूमिका निभाई।[4] मासस से जुड़े संगठन और लोग भी झारखंड आंदोलन में सहयोगी। बिहार कोलियरी कामगार यूनियन, किसान संग्राम समिति मासस की प्रमुख सहयोगी संगठन थी।

शोध विधि

शोध विधि मुख्य रूप से ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक तथा व्याख्यात्मक है। तथ्यों के संग्रहण हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। प्रकाशित तथा अप्रकाशित पुस्तकें शोध पत्र, समकालीन पत्र–पत्रिका आदि की सहायता ली गई है। इसके साथ–साथ झारखंड आंदोलन से जुड़े प्रमुख लोगों का साक्षात्कार भी लिया है। मासस और झामुओं से जुड़े लोगों से मिलकर भी तथ्यों को इकट्ठा किया गया है।

मासस ने खुलकर झारखंड राज्य निर्माण के सवाल अपने विचार रखे। इस बात का वर्णन ए. के. राय ने अपनी पुस्तक झारखंड और लालखण्ड नामक पुस्तक में विस्तार से किया है। मासस ने असमान विकास को झारखंड निर्माण का प्रमुख कारण बताया। इसके लिए ए. के. राय ने आंतरिक उपनिवेशवाद की अवधारणा का विकास करते हुए दक्षिणी बिहार (झारखंड क्षेत्र) को उत्तर बिहार का उपनिवेश बताया। तात्कालीन परिस्थिति में यह बात सही भी थी। बिहार के राजस्व का तीन चौथाई हिस्सा दक्षिणी बिहार से प्राप्त होता था, फिर भी राज्य के विकास व्यय का केवल पांचवां भाग यहां खर्च होता था। फलतः झारखंड सम्पन्नता में विपन्नता की विचित्र स्थिति से क्षुब्ध था।

बड़े–बड़े उद्योगों, कल कारखानों से कोई लाभ नहीं हुआ इसके विपरित बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन ही हुआ।[5] इस प्रकार मासस ने असमान विकास, भाषा संस्कृति तथा रहन–सहन के आधार पर भारत के संविधान के तहत अलग राज्य की मांग का आवाज बुलंद किया।

झारखंड की संस्कृति, अस्मिता की रक्षा और मुक्ति के सवाल को लेकर मासस ने समाजवादी विचार के साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमों) नामक संगठन बनाने का विचार रखा।[6] मासस ने झारखंड आंदोलन में अपने समाजवादी विचार रखे। झारखंड में शोषक और शोषित का मापदण्ड सिर्फ वर्ग आधारित मापदंड नहीं है, प्रांत आधारित भी है। यह शोषण नव उपनिवेशवाद से प्रेरित भारत के शासक वर्ग, विकसित जातियताओं और कम्यूनिस्टों के सांठगांठ से चलता रहा। अतः झारखंड के प्रगति, विकास एवं समस्त उद्योगों में झारखंडियों को प्राथमिकता देना होगा। झारखंड में मूलनिवासियों को झारखंड के उद्योगों में सिर्फ कुली, लेबर, रेजा ही नहीं बल्कि उच्च पदों तक भी अवसर प्रदान करना होगा। पिउन से लेकर जिलाअधिकारी तक पुरी कानून व्यवस्था में झारखंडियों का वर्चस्व कायम करना होगा।[7] इस प्रकार ए. के. राय ने आंदोलन में बौद्धिक क्रांति का नेतृत्व करते हुए झारखंड मुक्ति मार्चा के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई और इतिहास में पहली बार लाल झण्डे ने हरे झण्डे को पैदा किया।

मासस की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भारतीय समाज की जाति व्यवस्था को गहराई से समझा। वर्ण–व्यवस्था, छुआ–छुत के खिलाफ सामाजिक बराबरी के लिए राजनीतिक चिंतन को सामने लाया। दलितों, शुद्रों एवं आदिवासियों के प्रति पूरा सहानूभुति रहा। अर्थव्यवस्था के साथ वर्ण–व्यवस्था ठीक से समझा तभी मासस ने आंतरिक उपनिवेशवाद के सिद्धांत को रखा। दलित राष्ट्रीयता के सवाल को उठाया, यह मासस का महत्वपूर्ण चिंतन है।[8] मासस की एक विशेषता यह रहा है कि आदिवासी प्रश्न पर गंभीरता से विचार करना, अलग राज्य के लिए जमीन तैयार करना आदिवासियों के स्वतंत्र आंदोलन को पूर्णतः समर्थन देना। साम्प्रदायिकता के खिलाफ वर्गीय चिंतन के आधार पर एकता स्थापित करना मासस का कार्यक्रम रहा है।[9]

मासस ने झारखंड आंदोलन के साथ–साथ समाज के निचले से निचले तबको के अधिकार के लिए आंदोलन किया और उन्हें झारखंड आंदोलन के साथ जोड़कर मजबूती प्रदान की। ऐसा ही एक आंदोलन मासस ने मछुआरों के लिए लड़ा। डी. वी. सी ने पंचेत डैम से मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया था। डीवीसी के अधिकारी डैम में मछली पकड़ने वालों पर केस करके जेल भेज रहे थे। इस बात की जानकारी जब मासस को मिली तब मासस ने 1977 के आसपास मछुआरों को इकट्ठा करके एक विशाल आंदोलन किया। इस आंदोलन में पंचेत के आस–पास के गांवों के लोग भारी संख्या हिस्सा लिया।[10] इस आंदोलन के बाद मछुवारों को मछली पकड़ने और उसे कहीं भी ले जाकर बेचने का अधिकार मिला। यह मासस की एक बड़ी जीत थी। बाद में मासस ने मछुवारों के संगठन को झारखंड आंदोलन से जोड़ दिया। इससे पंचेत के आस–पास के इलाकों में झारखंड आंदोलन को बल मिला। इसके अतिरिक्त मासस ने कोयलांचल के विभिन्न कोलियरी में मजदूरों को संगठित करते हुए झारखंड आंदोलन को मजबुती प्रदान की। ईस्ट बसुरिया, मुनीडीह, लोदना, मघुबनी आदि विभिन्न कोलियरियों में मासस ने यादगार लड़ाई लड़ी। मुनीडीह कोलियरी में जुल्म और शोषण के खिलाफ शक्ति नाथ महतो संघर्ष छेड़ रखा था। 15 नवम्बर 1973 को सिजुआ गजलीटांड और आंगर पथरा के खदान के एक मजदूरों 60 राउन्ड गोली फायरिंग हुई थी। इसमें एक महिला समेत छः मजदूरों की मौत हुई। एक दर्जन से अधिक घायल हुए। इस घटना के बाद मासस ने शासन सत्ता की नींद हराम कर दी। 21 नवम्बर को कोयलांचल का उत्पादन ठप्प रहा। आंदोलन में लगभग एक लाख से ज्यादा मजदूरों ने हिस्सा लिया। मासस ने बातचीत का प्रस्ताव ठुकरा दिया। माफियाओं से मुक्ति और मजदूरों पर शोषण जुल्म को बन्द करने को कहा। शासन सत्ता ने प्रतिक्रिया स्वरूप कोयलांचल में बिगड़ती कानून व्यवस्था का हवाला देकर ए. के. राय बिनोद बिहारी महतो तथा शक्ति नाथ महतो को मीसा कानून के तहत गिरफ्तार कर लिया गया।[11] आंदोलन का गूंज दिल्ली तक गूंज रहा था।

इसी प्रकार मासस ने किसानों को संगठित करते धनबाद में किसानों का विशाल आंदोलन 1980 के आस–पास किया। इस आंदोलन की खास विशेषता यह थी कि आंदोलन में बड़ी संख्या में किसान बैलगाड़ी लेकर पहुंचे थे

और धनबाद संग्राहालय का घेराव कर दिया। किसानों की अपनी अलग–अलग समस्याऐं थी, खाद बीज इत्यादि।[12] मासस के इस आंदोलन से भी बाद में झारखंड आंदोलन को बल मिला। इस प्रकार मासस ने किसानों विस्थापितों तथा मजदूरों को संगठित करते हुए उनकी लड़ाई के साथ झारखंड आंदोलन की लड़ाई लड़ी।

झारखंड आंदोलन में झामुमों की भूमिका

झारखंड आंदोलन में झारखंड मुक्ति मोर्चा की अहम भूमिका रही है। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमों) का गठन ही झारखंड की मुक्ति अर्थात् इसके निर्माण के लिए किया गया था। झामुमों के संविधान के प्रस्तावना से भी यह बात स्पष्ट हो जाता है। प्रस्तावना में घोषणा की गई है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा किसानों, श्रमिकों, छात्रों, युवाओं, महिलाओं और सभी शोषित पीड़ित लोगों की स्वतंत्र इच्छा से गठित एक राजनीतिक संगठन है। इसका प्रमुख उद्देश्य झारखंड राज्य की स्वायत्ता के लिए आंदोलन करना है जिसके लिए झामुमों ने एक संगठन के रूप में अपनी शुरूआत की और तात्कालीन मुद्दों से निपटा।[13]

झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमों) का गठन 4 फरवरी 1972 को श्री बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन, पूर्णेदू नारायण सिंह, ए. के. राय आदि के आपसी सहयोग से बिनोद बिहारी महतो के घर पर किया गया था। इसका गठन दो सामाजिक संगठन शिवाजी समाज तथा सोनोत संताल समाज को मिलाकर किया गया था।[14] अपने गठन के बाद झारखंड आंदोलन में न केवल शुन्यता की स्थिति से दूर किया बल्कि आंदोलन के एक मजबूत कार्यक्रम को आधार शिला की नींव डाली। झारखंड आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए झामुमों ने सामाजिक आंदोलन का नेतृत्व किया। सामाजिक जागृति जैसे – शराबबंदी, पशुपालन, सामूहिक कृषि, महाजनों, माफियाओं, सुदखोरों के खिलाफ संघर्ष जल जंगल जमीन के अधिकार के लिए लड़ने के लिए लोगों को गांव–गांव घुमकर प्रेरित करने का काम झामुमों ने किया। इसका परिणाम हुआ की जगह–जगह पर सभा जुलुस और क्रांतिकारी आंदोलन प्रारंभ हो गया। आंदोलन को धीरे–धीरे उग्र करने में झामुमों ने कोई कसर नहीं छोड़ा। इससे बिहार सरकार चिंतित हो उठी। सरकार विनोद बिहारी महतो को गिरफ्तार करके जेल में डाल दी। शिबू सोरेन को भी गिरफ्तार करने का प्रयास करने लगी लेकिन वे छिप–छिपा कर लोगों के सहयोग से आंदोलन करते रहे। सरकार उनकी सभा पर प्रतिबंध लगा दिया। सरकार के कारनामों से झारखंड आंदोलन की उग्रता के विषय में आप अनुमान लगा सकते हैं। शिबू सोरेन ने आंदोलन को जारी रखने के लिए टुंडी से पांच किलोमीटर दूर पोखरिया गांव में एक आश्रम बनाया जहां से आंदोलन का संचालन होता था और यही से संताल परगना जिला में आंदोलन का विस्तार होता रहा।

यही पर पोखरिया आश्रम में शिबू सोरेन को 'दिशोम गुरू' की उपाधि दी गई।[15] इसके अलावे महाजनों और सुदखोरों के खिलाफ भी आंदोलन जारी रहा। धनकटनी आंदोलन और अधिक व्यापक होता चला गया। झारखंड मुक्ति मोर्चा आंदोलन के साथ–साथ समाज के लिए कई रचनात्मक कार्य प्रारंभ किए ताकि आदिवासी समाज की हालात में सुधार आए। रचनात्मक कार्यों में शराबबंदी रात्री पाठशाला, पशुपालन तथा सामुहिक कृषि आदि प्रमुख कार्य झामुमों के द्वारा चलाया गया था। आदिवासी समाज में नशाखोरी एक प्रमुख समस्या बन गई थी। नशा के लत में लोग अपना घर–परिवार जमीन जगह सभी को बर्बाद कर रहे थे। इस समस्या को समझते हुए शिबू सोरेन ने रात्रि पाठशाला के जरिये और घर–घर घुम–घुम कर नशा से होने वाले नुकसान के बारे में बताया और नशाखोरी के खिलाफ पुरजोर अभियान चलाया। जनजातीय समाज के विकास के लिए लोगों को पशु पालने के लिए प्रोत्साहित किया। सामूहिक रूप से कृषि करने के लिए प्रेरित किया। इन सारे रचनात्मक कार्यों से समाज में जागृति आयी और झामुमों का जनाधार मजबूत हुआ। शिबू सोरेन ने झारखंड में सामाजिक उत्थान एवं आत्मनिर्भरता की ओर ध्यान देते हुए बहुत सारे कार्य किए। शिबू सोरेन ने एक 19 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की, यह काफी कारगर रहा। समाज के कुछ लोगों ने समर्थन किया तो कुछ ने विरोध किया। विरोध को नजरअंदाज करते हुए अज्ञानता तथा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु हर संभव प्रयास किए।[16] झामूमों के 19 सूत्री कार्यक्रम में सबसे अधिक सफल सामूहिक कृषि और सामूहिक पशुपालन रहा। काफी हद तक शराबबंदी भी सफल रहा। इससे आदिवासी समाज को नई उर्जा मिली। 1980 तक आते–आते झामुमों झारखंड क्षेत्र का प्रमुख राजनैतिक दल बन गया। झामूमों ने अपना पहला

चुनाव 1980 में एक पंजीकृत दल के रूप में बिहार राज्य विधान सभा का चुनाव लड़ना प्रारंभ किया। इसी समय से शिबू सोरेन और बिनोद बिहारी महतो में बात बिगड़ने लगी। बिनोद बिहारी महतो ने शिबू सोरेन के द्वारा इंदिरा गांधी के साथ किए गए गठजोड़ को झारखंडी हितों के लिए धोखा माना। इस समझौते को कुट आलोचना की। झारखंड आंदोलन का वैज्ञानिक स्तर पर कोई वैचारिक आधार न होने की शिकायत की। उन्होंने यहां तक कहा कि आदिवासी नेता परम्परा से बिकाऊ माल साबित हुए हैं।[17] इस प्रकार झामूमों का दो भागों में विभाजन हो गया। दोनों के रास्ते अलग–अलग हो गया। इससे झारखंड आंदोलन ज्यादा प्रभावित नहीं हुआ। ए. के. राय भी मार्क्सवादी समन्वय समिति पर अपना ध्यान केंद्रित किया। तीनों अलग–अलग विचारधारा से झारखंड राज्य निर्माण की लड़ाई को बढ़ाते रहे। विचारधारात्मक आधार पर तीनों अलग–अलग राय रखते थे पर झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन के लिए आपसी सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहे। कहीं ज्ञापन सौंपना हो, जुलुस करना हो या हड़ताल का आयोजन करना हो उस समय एकजुट होकर काम करते थे।

निष्कर्ष

झारखंड मुक्ति मोर्चा और मार्क्सवादी समन्वय समिति का झारखंड राज्य के निर्माण में बहुमूल्य योगदान रहा है। दोनों संगठनों ने धरातल पर जा–जा कर लोगों को संगठित करते हुए राज्य निर्माण आंदोलन में नयी उर्जा भरने का काम किया। आंदोलन करने के साथ–साथ दोनों संगठनों की खास विशेषता यह देखने को मिली की अपने आप को समाज सुधार से जोड़ लिया। सामाजिक जागृति और आंदोलन से पुनः झारखंडी भावना के विकास में बल मिला। झामूमों के शराबबंदी, सामुहिक कृषि, सामुहिक पशुपालन रात्रि पाठशाला आदि कार्यक्रमों से समाज को नई उर्जा मिली। ए. के. राय भी इससे काफी पहले से ही 'साथी' संगठन के जरिये रचनात्मक कार्य में लगे हुए थे। मासस ने मजदूरों को बड़ी संख्या में झारखंड आंदोलन से जोड़ा वही झामूमों ने आदिवासियों मूलवासियों को झारखंड आंदोलन से जोड़ा। दोनों संगठनों ने सामूहिक प्रयास से झारखंड आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक महत्वपूर्ण पहलू यह देखने को मिलता है कि झारखंड आंदोलन के नेतृत्व के अलावा माफियाओं सूदखोरों भ्रष्टाचारियों के खिलाफ भी आंदोलन का नेतृत्व किया। इस प्रकार दोनों ने झारखंड आंदोलन को समाजवादी रंगत देने का काम किया। इस प्रकार कह सकते हैं कि 10 के दशक से लेकर झारखंड राज्य के निर्माण तक दोनों दलों की महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिलती है। हालांकि राज्य के निर्माण के बाद झामूमों केवल सत्ता का सुख भोगने वाली पार्टी बन कर रह गई। जो सपना झारखंड के लिए देखा गया था वह केवल सपना ही रह गया। राज्य निर्माण के 24 वर्षों के बाद भी जनता की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। स्थानीय नीति का निर्माण ठीक ढंग से अभी तक नहीं हो पाया है। यह झारखंड के लोगों के लिए सपना ही बना हुआ है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। इसका कारण चाहे जो भी हो पर अभी भी राज्य निर्माण का सपना अधुरा है।

संदर्भ सूची

1. श्री आनंद महतो, पूर्व विधायक सिंदरी विधान सभा, धनबाद उनके निवास स्थान पर 10.09.2021 को लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार।
2. श्री आनंद महतो, पूर्व विधायक सिंदरी विधान सभा, धनबाद उनके निवास स्थान पर 10.09.2021 को लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार।
3. श्री सुबुर गोराई, स्थानीय निवासी, नुनुडीह, धनबाद से ए. के. राय स्मृति भवन नुनुडीह में दिनांक 09.09. 2021 को लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार।
4. महतो शैलेन्द्र (2015), झारखंड की समरगाथा, दानिश बुक्स दिल्ली, पृ. 346।
5. विरोत्तम बी. (2017), झारखंडरू इतिहास एवं संस्कृति, बिरि हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 38।
6. मासस के पचास साल, मार्क्सवादी समन्वय समिति धनबाद, पृ. 23।

7. महतो शैलेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 346।
8. मासस के पचास साल, मार्क्सवादी समन्वय समिति धनबाद, पृ. 23।
9. वही, पृ. 23।
10. पंचेत में मछुवारों के समूह के साथ 11.01.2022 को साक्षात्कार।
11. मासस के पचास साल, मार्क्सवादी समन्वय समिति धनबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 22।
12. श्री आनन्द महतो, पूर्व विधायक सिंदरी विधानसभा, धनबाद, उनके निवास स्थान पर 10.09.2021 को लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार।
13. झारखंड मुक्ति मोर्चा संविधान, धनबाद, पृ. 2।
14. महतो शैलेन्द्र, पूवोक्त, पृ. 295।
15. वही, पृ. 305।
16. तलवार वीर भारत (2017), झारखंड आंदोलन के दस्तावेज, नवारूण पब्लिकेशन, उत्तर प्रदेश, पृ. 213।
17. दत्त बलबीर (2014), कहानी झारखंड आंदोलन की इतिहास से साक्षात्कार क्राउन पब्लिकेशन, रांची, पृ. 225—226।

****